International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 (www.ijsrset.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRSET

जौनपुर जिले में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

(Study of Teaching Effectiveness of Teachers Working in Secondary Level Schools Located in Jaunpur District)

Sandeep Kumar Yadav
Research Scholar, Education Department,
Ram Awadh Yadav Ganna Krishak PG College Takha Shahganj Jaunpur,
Affiliated, Veer Bahadur Singh Purvanchal University, Jaunpur, Uttar Pradesh, India

Article Info
Volume 8, Issue 5
Page Number : 06-11

Publication Issue :
September-October-2021

Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published: 03 Sep 2021

सारांश (ABSTRACT) :

शंकराचार्य के दृष्टिकोण में शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए , तो गांधी ने कहा कि शिक्षा मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। शिक्षक इतिहास का निर्माता होता है और राष्ट्र का इतिहास तो विद्यालयों मे ही लिखा जाता है । विद्यालय और शिक्षकों की तुलना करना व्यर्थ है । आज समाज की स्थिति को देखने से लगता है कि शिक्षक में ऐसी क्या कमी है जो आज समाज द्वारा प्रश्न चिन्ह लगाया जाता है । आज शिक्षक की शिक्षण कुशलता उसकी कार्यशैली पर प्रश्न चिन्ह उठ रहा है । वर्तमान में शिक्षक कक्षाओं में छात्रों के साथ सामूहिक तौर पर अंतः क्रिया करता है शिक्षक का छात्रों की सफलता में कितना योगदान है यह शिक्षक की कर्मठ शीलता पर निर्भर करता है । विद्यालय के बाहर वे अन्य तत्वों जैसे अभिभावक या समाज का कितना योगदान है निश्चित रूप से आकलन किया जाना संभव नहीं है । शिक्षक का अपने छात्रों के समग्र विकास में कितना प्रभाव पड़ा तय नहीं किया जा सकता है । शोधार्थी द्वारा इस शोध अध्ययन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले मैं स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना है, इसके लिए शोधार्थी द्वारा 200 शिक्षकों का चयन सरकारी, वित्त पोषित एवं वित्तविहीन विद्यालयोंं से चयन किया है इसके

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

लिए विद्यालयो के शिक्षकों की प्रभावशीलता के मापन के लिए डॉक्टर पी. कुमार एवं डॉक्टर डी.एन. मुथा (1999) द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत मापनी का प्रयोग किया ,साख्यिकी विश्लेषण के लिए मध्यमान ,मानक विचलन एवं टी-मान की गणना की गयी ।

प्रयुक्त शब्दावली : माध्यमिक स्तर, शिक्षक, शिक्षण, प्रभावशीलता आदि ।

प्रस्तावना:

किसी भी समाज की प्रगति का अनुमान उस समय के शिक्षा के स्तर से लगाया जा सकता है वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा का विशेष महत्व है । हमारे देश में भाषा, क्षेत्र, जाति आदि का मिश्रण है जिसका विकास शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है इसमे अध्यापको की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करती है जो उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । व्यक्ति का विकास वाछंनीय परिवर्तन करने के लिये व्यवस्थित शिक्षा तथा योग्य अध्यापकों की आवश्यकता होती है । बालक का सर्वांगीण विकास तभी संभव हो सकता है जब योग्य गुरु मिले तथा वह उनके आदर्शों और सिद्धांतों का अनुसरण करें , जितना महत्व शिक्षा का होता है उससे कहीं अधिक महत्व अध्यापक का होता है । शिक्षक वह धूरी है जिस पर परीक्षा व्यवस्था घूमती है, शिक्षक को समाज का निर्माता माना जाता है । पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने लिखा है कि, एक अध्यापक ने एक बार कहा था कि मुझे 5 वर्ष का एक बच्चा दो, 7 साल बाद कोई भगवान या शैतान भी उस बच्चे को बदल नहीं सकता है यह दावा एक प्रभावशाली शिक्षक ही कर सकता है ।

शिक्षक द्वारा किसी विद्यालय की व्यवस्था, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षण अधिगम सामग्री, शिक्षण विधि आदि को प्रभावशाली बनाया जाता है । खराब शिक्षण सामग्री को अच्छा बनाने का दायित्व भी शिक्षक पर ही होता है । जब शिक्षक पूर्ण समर्पित होकर कोई कार्य करता है तो खराब से खराब चीजें भी व्यवस्थित हो जाती हैं । शिक्षक की सफलता को छात्र की सफलता से जोड़ा जाता है अतः यह कहना उचित ही होगा कि राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की भूमिका अतुलनीय होती है ।

शंकराचार्य के दृष्टिकोण में शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए , तो गांधी ने कहा कि शिक्षा मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। शिक्षक इतिहास का निर्माता होता है और राष्ट्र का इतिहास तो विद्यालयों मे ही लिखा जाता है । विद्यालय और शिक्षकों की तुलना करना व्यर्थ है । आज समाज की स्थिति को देखने से लगता है कि शिक्षक में ऐसी क्या कमी है जो आज समाज द्वारा प्रश्न चिन्ह लगाया जाता है । आज शिक्षक की शिक्षण कुशलता उसकी कार्यशैली पर प्रश्न चिन्ह उठ रहा है । वर्तमान में शिक्षक कक्षाओं में छात्रों के साथ सामूहिक तौर पर अंतः क्रिया करता है शिक्षक का छात्रों की सफलता में कितना योगदान है यह शिक्षक की कर्मठ शीलता पर निर्भर करता है ।

विद्यालय के बाहर वे अन्य तत्वों जैसे अभिभावक या समाज का कितना योगदान है निश्चित रूप से आकलन किया जाना संभव नहीं है । शिक्षक का अपने छात्रों के समग्र विकास में कितना प्रभाव पड़ा तय नहीं किया जा सकता है ।
शोधार्थी द्वारा इस शोध अध्ययन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले मैं स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना है, इसके लिए शोधार्थी द्वारा 200 शिक्षकों का चयन सरकारी, वित्त पोषित एवं वित्तविहीन विद्यालयों से चयन किया है इसके लिए विद्यालयो के शिक्षकों की प्रभावशीलता के मापन के लिए डॉक्टर पी. कुमार एवं डॉक्टर डी.एन. मुथा (1999) द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत मापनी का प्रयोग किया ,साख्यिकी विश्लेषण के लिए मध्यमान ,मानक विचलन एवं टी-मान की गणना की गयी ।
प्रस्तुत शोध अध्ययन सरकारी, वित्त पोषित एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों से संबंधित है इसके अंतर्गत जौनपुर जिले के विद्यालयों का चयन किया गया है जिसमें 200 शिक्षकों का चयन लाटरी पद्धति से किया गया ।

प्रस्तुत विषय पर संबंधित साहित्य का अवलोकन किया गया तो कुमार (1991) ईस्वी में अपने अध्ययन में पाया कि कला व विज्ञान तथा वाणिज्य व विज्ञान शिक्षक समान रूप से प्रभावशाली पाए गए ।
सक्सेना (1995) के अध्ययन में पाया कि प्रभावी एवं अप्रभावी शिक्षक अपने कृत्य से संतुष्ट समायोजित तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक मनोवृति रखते हैं ।
गौड एवं सिंह (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि सरकारी, निजी विद्यालय मे विवाहित, अविवाहित सामान्य एवं एससी के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं था लेकिन सामान्य व ओबीसी तथा एससी व ओबीसी के शिक्षकों की सार्थक अंतर था ।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. वित्त पोषित एवं सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना ।
2. सरकारी एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना ।
3. वित्त पोषित एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना ।

परिकल्पना :

1. वित्त पोषित एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है ।
2. सरकारी एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है ।
3. वित्त पोषित एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है ।

न्यादर्श :

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा न्यादर्श के लिए जौनपुर जिले में स्थित सरकारी, वित्त पोषित एवं वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है । इन विद्यालयों से 200 शिक्षकों का चयन लॉटरी विधि से किया गया है जिसमें वित्त पोषित

विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या 83, सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या 57 तथा वित्तविहीन विद्यालयों से शिक्षकों की संख्या 60 का संकलन किया गया है ।

शोध उपकरण :

प्रदत्तो के संकलन हेतु डॉ. पी. कुमार एवं डॉ. डी.एन. सुथा (1999) द्वारा निर्मित प्रमाणित मापनी का प्रयोग किया गया है इसके मापनी में पदों को 6 क्षेत्रों तथा 10 उपक्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इस उपकरण की विश्वसनीयता को ज्ञात करने पर 0.82 तथा अंतराल 0.86 पाई गई है । इसकी वैधता ज्ञात की गई और यह उच्च स्तर की पाई गई । प्रदत्तो से निष्कर्ष निकालने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान की गणना की गई ।

विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम :

तालिका संख्या- 01

सरकारी और वित्त पोषित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन ।

सरकारी और वित्त पोषित विद्यालयों में शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात तथा सार्थकता स्तर ।

क्र.स.	विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	सरकारी	57	317.92	21.18	.754	0.05 स्तर
2	वित्तपोषित	83	320.85	21.05		पर असार्थक

व्याख्या :

तालिका संख्या एक में मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि वित्त पोषित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के तुलना में अधिक पाई गई है ।

अतः उन दोनों विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है अथवा नहीं यह जानने के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई । क्रांतिक अनुपात के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं वित्त पोषित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात 0.05 स्तर पर असार्थक है ।

तालिका संख्या-02

वित्त पोषित और वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान, मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात तथा सार्थकता स्तर ।

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	वित्त पोषित	83	320.65	21.08		0.01 स्तर
2	वित्तविहीन	60	302.25	15.02	6.11	पर सार्थक

व्याख्या:

तालिका संख्या दो में दर्शाये गये मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि वित्त पोषित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च है ।

अतः दोनों विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है या नहीं यह जानने के लिए क्रांतिक अनुपात के अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि वित्त पोषित एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर है क्योंकि क्रांतिक अनुपात 0.01 स्तर पर सार्थक है ।

तालिका संख्या -03

वित्तविहीन एवं सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता स्तर ।

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	वित्तविहीन	60	302.25	15.02	4.59	0.01 स्तर
2	सरकारी	57	317.92	21.18		पर सार्थक

व्याख्या :

तालिका संख्या तीन में दर्शाए गए मध्यमान मूल्यों से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता में साख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है या नहीं यह जानने के लिए क्रांतिक अनुपात के अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं वित्तविहीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर है क्योंकि क्रांतिक अनुपात 0.01 स्तर पर सार्थक है । कनिष्का शोधार्थी के अध्ययन के परिणाम स्वरूप प्राप्त उपलब्धियों के साधन ना कहा जा सकता है सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के प्रभावशीलता वित्त पोषित विद्यालयों की विधियों की तुलना में अधिक कुछ है सरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की प्रभावशीलता वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च है वित्त पोषित विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता

वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता की तुलना में अधिक कुछ पाई गई 88 वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों में प्रभावशीलता सबसे निम्न पाई गई है

आगामी शोध हेतु सुझाव:

1. प्रस्तुत शोध मे केवल जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है अतः अन्य जिलों को भी शोध का बिषय बनाया जा सकता है ।
2. भावी शोध हेतु लिंग भेद, ग्रामीण शहरी को आधार बनाकर अध्ययन किया जा सकता है
3. प्रस्तुत शोध में 200 न्यादर्श लिया गया है , भावी शोध हेतु इससे अधिक न्यादर्श लिया जा सकता है
4. प्रस्तुत शोध में माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है जबकि भावी शोध में प्राथमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालय का चयन करके शोध अध्ययन किया जा सकता है ।
5. भावी शोध मे विभिन्न विषय वर्गों को आधार बनाया जा सकता है ।
6. भावी शोध में अध्यापकों की व्यवसायिक तनाव का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ :

1. कपिल, एच. के.(1988) सांख्यिकी की मूल तत्व, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर ,
2. राव, एन.पी.(2009) माध्यमिक स्तर पर निष्पादित एवं शिक्षाकर्मी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, मॉडर्न एजुकेशन रिसर्च इन इंडिया,
3. शुक्ला, श्रद्धा (2002) पर्सनालिटी एज ए फेक्टर आफ इफैक्टिवनेस इंडियन, जर्नल आफ एजुकेशनल रिसर्च वा.21 अंक 1
4. कुमार, पी. व मुथा, डी.एन.(1955) उपकरण टीचर इफैक्टिवनेस स्केल,
5. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ 2015) नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ,
6. एटलस बर्गर एच. हैण्डबुक फार इनफॉरमेशन फॉर एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, न्यूयॉर्क स्प्रिंगर 2002,
7. आर. नटराजन(2001) स्कूल क्लाइमेंट एज जैव सर्टिफिकेशन आफ टीचर्स, जनरल ऑफ इंडियन एजुकेशन वॉल्यूम 27, अंक 2, एनसीईआरटी, न्यू दिल्ली,